क्या धर्म-संघ, शिक्षा और ज्ञान की उक्त परिभाषाओं के अनुरूप, शिक्षा और ज्ञान फैला रहे हैं? क्या महाविद्यालयों की पढ़ाई इस कसौटी पर खरी उतरती है? अगर नही तो ये प्रश्न ही इतने कीमती हैं कि प्रश्न स्वयं किसी सच्ची व्यवस्था को जन्म दे देंग। गुरू होने का दायित्व जिसने ओढ़ रखा है, उससे पूछो कि आप कहाँ कमजोर हैं? हम क्या योगदान करें? यह एक साझेदारी है। गुरू-शिष्य बराबरी का व्यवहार नही, पिता-पुत्र का नाता नहीं, तो और क्या है?

छोटा बच्चा जब तीली जलाकर कमरे में बिस्तर पर गिरा देता है तो पूरे मकान को जला डालने की बदनामी उसे मिल जाती है। एक बडे परन्तु गलत कार्य को करने की बदनामी लेने के लिये उसे तीली भर जलानी है। वैसे ही महान कार्यो का श्रेय लेने के लिये भी एक शुरूआत भर करनी होती है। सही समय, सही स्थान पर बोलने अथवा लिखने का साहस हमें बे झिझक करना है बिना लीपा पोती किये हुये।

महाभारत निर्माण मंच देश भर के युवा वर्ग को ऐसी ही माचिस की तीलियाँ देने का उद्योग करना चाहता है। साथ ही उनमें एक साहस का संचार करना चाहता है कि वे तीलियां जलाकर बिस्तर पर डाल दे। क्योंकि इन बिस्तरों पर सोने के अधिकार से वे सब वंचित है। जब कुछ बिस्तर जलेंगे तो सत्ताधारी वर्ग हमारी भागीदारी का भी सम्मान करने लग जाएगा। यह समूची प्रक्रिया एक स्वावलम्बी ढ़ंग से ही चलेगी। इसकी सफलता से हम पूरी तरह आश्वस्त हैं।

इन पत्रों को देश भर के महाविद्यालयों में युवकों के नाम लिखने की तैयारी कर लो। सफलता के लिये संगठन को आकार लेते देर नही लगेगी। हमारी कोशिश है कि शांति कुन्ज हरिद्वार, जैन विश्व भारती, आर्यसमाज, इसकॉन आदि सभी संस्थायें मानव जाति के लिये बेहतर ढंग से उपयोगी हो सके। अत: अब आत्म-प्रवंचना छोड़ नंगी सच्चाईयों की चुनौतियां स्वीकार करने का समय आ पहुंचा है।

"पात्रता" में अभिशाप को भी वरदान में बदलने की क्षमता है। बिना पात्रता के वरदान भी अभिशाप बन जाते हैं।

इस संसार में हर चीज का उचित मूल्य चुकाने के अतिरिक्त और कोई अन्य मार्ग है ही नहीं।

युद्ध और आतंकवाद के कारण

आतंकवाद समाप्त होने का नाम इसलिए नहीं ले रहा है, क्योंकि मात्र घोषणापत्रों के प्रभाव में आकर आतंकवादी मनोवृत्तियों पर अंकुश नहीं लग सकता। विश्व के किसी भी मंच से आध्यात्मिकता की चर्चा ही नहीं होती। इसलिए नहीं होती क्योंकि ये मंच राजनीतिज्ञों द्वारा बनाए जाते हैं। राजनीति में उदारता और सहिष्णुता के लिए कहीं कोई स्थान नजर नहीं आता, क्योंकि किसी न किसी रूप में अमरीका, बिटेन, फ्रांस, स्वीडन आदि देशों में स्थापित अत्याचार, आतंक, युद्ध के गोला-बारूद, तोप, टैंक एवं हथियारों के उद्योगों को चलाने और तैयार माल खपाने के लिए आतंक, युद्ध से सुरक्षा के लिये सुरक्षा सेनायें और उनका साजो-सामान एवं गोला-बारूद बहुत आवश्यक बना दिया गया है।

क्या, क्यों ओर कैसे???

मौजूदा भारत-पाक पृष्ठभूमि में अमरीका और उसके मित्र राष्ट्र या पश्चिमी शिखर राष्ट्र स्थिति का नाजायज फायदा उठाते रहे हैं और अभी भी उठाना चाहते हैं। क्या, क्यों, कैसे के दायरे में इसकी जांच की जानी चाहिये।

क्या? : प्रत्येक देश द्वारा अपनी सुरक्षा हेतु आतंक एवं युद्ध से सुरक्षित बच निकलने हेतु तोप, टैंक, गोला-बारूद, बमवर्षक विमान एवं आंतरिक सुरक्षा हेतु आधुनिकतम नये-नये साफ्टवेयर, राडार व अन्य सैनिक साजो-सामान की आवश्यकता पैदा करना।

क्यों? : सैनिक सुरक्षा एवं आंतरिक सुरक्षा उपकरणों के सैन्य उद्योगों को बनाये रखने, उसके उत्पादन और तैयार माल को बेचने के लिये अविकसित, विकासशील एवं विकसित राष्ट्रों को अपना बाजार बनाने और अपने माल की खपत बढ़ाने के लिये।

कैसे? : कोरिया, क्यूबा, ईराक, ईरान, बोस्निया, अफगानिस्तान और अब भारत-पाकिस्तान के बीच आतंक एवं युद्ध की परिस्थितियां पैदा करक। इस्लामी कट्टरपंथियों को प्रोत्साहित कर, बिन लादेन जैसे आतंकी पैदा कर आतंक और युद्ध के हालात द्वारा अपने सैनिक साजो-सामान का बाजार निर्मित करके।